ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBBIL04292
RNI REG. NO. UPBBIL/2014/66218 PP. NO.- 117-119

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-13, No.-I, Issues-16 YEAR- June. -2020

समसामयिकता के संदर्भ में नागार्जुन-साहित्य का मूल्यांकन

हर्षलता शाह

असि0 प्रोफेसर विभागाध्यक्षा, हिन्दी विभाग श्री शंकरलाल सुंदरबाई शासुन जैन महिला महाविद्यालय, टी.नगर, चेन्नई (तमिलनाडु), भारत

Received- 28.03.2020, Revised- 03.04.2020, Accepted - 09.04.2020 E-mail: 9882180498nestor@gmail.com

सारांश : *"हिटलर के ये पुत्र–पौत्र तक निर्मूल न होंगे–*
हिंदू–मुस्लिम–सिख–फासिस्टों से न हमारी
मातृभूमि यह जब तक खाली होगी–
संप्रदायवादी दैत्यों के विकट लौह
जब तक खंड़हर न बनेंगे
तब तक मैं इनके खिलाफ लिखता जाऊँगा
लौह–लेखनी कभी विराम न लेगी।" शपथ (कविता)– श्री नागार्जुन

समसामयिक रचनाकार परिस्थितियों को तौलते हुए बीच का रास्ता निकालने में सक्षम होता है। उसकी दृष्टि गहरी विचार शक्ति से समसामयिकता की सार्थकता को महत्व देता है। नागार्जुन इन्हीं समसामयिक कवियों में अग्रणी माने जाते हैं। उनके इसी समसामयिक साहित्य को तीन भागों में बाँटा जा सकता है–

कुंजीभूत शब्द– फासिस्टों, मातृभूमि, दैत्यों, खंड़हर, लौह – लेखनी, समसामयिक, रचनाकार, परिस्थितियों।

सन् 1911 से 1982 तक नागार्जुन का समसामयिक काल है, इन्हें ऐसे विभक्त किया जा सकता है–

1935–1947 (स्वतंत्रता–पूर्व का चरण)

1947–1962 (स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात् का चरण)

1962–1982 (मोहभंग के बाद का चरण)

प्रथम चरण परतंत्रता का समय था तब कवि देश की दुर्व्यवस्था पर आँसू बहा रहे थे। ऐसे समय में नागार्जुन की ओजस्वी वाणी ने सुसुप्त युवकों में जागरण की ज्वाला फूँक दी थी।

द्वितीय चरण में स्वतंत्रता प्राप्ति से ही शुरू होता है। आम जनता का मोहभंग नहीं होता। इस चरण में सामाजिक और राजनीतिक समस्याओं के भीतर अविद्या, अज्ञान, अर्थ–संक्रमण और सांप्रदायिकता की समस्या देश के सामने आती है। आर्थिक विषमता, विवेकता, जातिवाद, स्वार्थपरता, घृणा एवं शोषण चरम सीमा पर पहुँच जाते हैं। इस विषाक्त वातावरण में प्रजातंत्र की दुर्गति हो जाती है। इस काल विशेष में नागार्जुन की कविता में समसामयिकता का महत्व और भी बढ़ जाता है।

नागार्जुन का तृतीय चरण 62 से 81 तक ही था। उस समय राष्ट्रीय व अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर अनेक बदलाव हुए थे। जिसमें अनेक प्रकार के संघर्ष शामिल थे। उस समय की घटनाओं के परिप्रेक्ष्य में नागार्जुन की कविता का समसामयिकता के अंतिम चरण के संदर्भ में मूल्यांकन अत्यंत समीचीन एवं महत्वपूर्ण है।

तीनों ही चरण परिस्थितियों पर आधारित होने के कारण भी नागार्जुन का साहित्य उस समय से संबंधित है। विषय की सीमा को ध्यान में रखते हुए मैंने समसामयिक संदर्भों के अंतर्गत नागार्जुन की कविता को व्याख्यायित करने का प्रयास किया है। जो इस प्रकार है–

शिक्षा की जितनी आवश्यकता उतना अभावः

अर्थ के अभाव के कारण कभी–कभी शिक्षा जैसी अत्यावश्यक चीज को हम भूल जाते हैं। नागार्जुन ने इस विषय को अपनी कविता में बड़ी ही मार्मिकता से प्रस्तुत किया है। इस समस्या को उनकी कविता 'जया' ने बड़े ही मार्मिक ढंग से प्रस्तुत किया है। यह कविता चार साल की चपल चतुर और बहरी गूँगी जया नाम की लड़की के प्रति व्यक्त की गई है। कवि के लिए उसका नाम सुंदर नयनाभिराम है। कवि की स्नेह–सुधा से वह कृतज्ञ–सी हो जाती है। माँ–बाप के गरीब होने के कारण होशियार लड़के के पढ़ने–लिखने की सुविधा भी वे नहीं कर पाते। कवि का मानना है कि जया चित्रकार या नर्तकी बन सकती है क्योंकि उसके पास बुद्धि और प्रतिभा दोनों ही है, लेकिन अर्थाभाव सपनों पर पानी फेंरने में कोई कसर नहीं छोड़ता। एक स्कूल मास्टर के लिए ऐसे विद्यार्थियों को पाना बहुत मुश्किल हो जाता है। कवि इस सार्थकता को वाणी देता है–

"स्कूली जीवन के मास्टर का हो जिसमें लेखा।
मैंने झांका तो देखा
बाहर सफेद अंदर धुंधला
क्या कर सकता वह बाप भला
बाहरी गूँगी उस बच्ची को शिक्षा–दीक्षा काइन्तजाम।"
– जया (कविता)

नागार्जुन ने अपनी कविता में प्रत्यक्ष व अप्रत्यक्ष

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-13, No.-I, Issues-16 YEAR- June. -2020

इस समस्या को बार–बार उठाने की कोशिश की है जो पाठकों के मन को बार–बार झंकझोर देती हैं। उनकी कविताओं में सामाजिक चेतना को उठाने का बार–बार प्रयास किया है। वे ऐसे कवि है जिन्होंने बच्चों की प्राथमिक वस्तुओं को बार–बार हमारे सामने रखा है।

आर्थिक अभाव के कारण वर्गगत खाई का संदर्भ– समाज में आज सभी प्रकार के व्यक्ति रहते हैं परंतु अर्थ ऐसी चीज है जो परिवार के साथ–साथ मन में भी खाई उत्पन्न कर देता है। नागार्जुन की एक कविता 'रवि ठाकुर' ऐसी कविता है जिसमें कवि ने वार्षिक संदर्भ को निजी जीवन के परिप्रेक्ष्य में तुलनात्मक रूप में प्रस्तुत किया है। कवि ने एक और विश्व कवि रवि ठाकुर की संपन्न जिन्दगी को रखा है, दूसरी ओर अपनी जिन्दगी की गरीबी, दुःख और दारिद्र्य का चित्रण किया है। वह गुरुदेव से कहता है कि इतना संपन्न होने पर भी तुम अपवाद स्वरूप इस आडम्बर में अकर्मण्य आलसी और विलासी नहीं हुए, तुम कवि हो गये, पीड़ित मनुष्यता के निम्नतम स्तर की अनुभूतियों से परिपूर्ण कवि हो गये। अपने विषय में वह अपनी अभावग्रस्तता के विषय में बताता है:

"पैदा हुआ था मैं.
दीन–हीन अपठित किसी कृषक् कुल में
आ रहा हूँ पीता अभाव का असठ ठेठ बचपन से
कवि! मैं रूपक हूँ दबी हुई दूब का
हरा हुआ नहीं कि चरने को दौड़ते।
जीवन गुजरता प्रतिपल संघर्ष में"
– रवि ठाकुर' (कविता)

कवि ने यहाँ स्पष्ट रूप में बताया है कि एक ओर आटा, दाल, नमक, लकड़ी के जुगाड़ में, पत्नी–पुत्र की आवश्यकताओं में सेठ के हुक्म को तामील देने में उस जैसे कवि की अभावग्रस्त जिंदगी बीतती है। यह आर्थिक स्थिति ही वर्गगत खाई का कारण बनती है। परंतु नागार्जुन ने इस कविता में कवि के आर्थिक अभाव और वर्गगत दूरी के रहते हुए भी अपने व्यक्तित्व और अपने कर्तव्य की दृढ़ता से उपस्थित किया है।

पिछड़ी जनजाति को सामाजिक जागरण प्रदान करने का संदर्भ –इस संदर्भ के अंतर्गत कवि ने अपनी कविता में पिछड़ी जन–जाति में सामाजिक जागरण उत्पन्न करने का प्रयास बताया है। कवि विन्ध्य पर्वत को पिछड़ी जनजाति का प्रतीक मानता है और बताता है कि किस प्रकार वह अपने अभावों से झुक गया है। जबकि उसकी भूमि में सोना, चाँदी, लोहा और इस्पात हैं। उसकी भूमि में सैकड़ों खानें दबी पड़ी है। इस प्रकार विन्ध्य–वासियों के प्रति, वहाँ की उपेक्षित निम्न जातियों के प्रति जागरण का सामाजिक संदेश मुखर किया गया है। कवि वहाँ की पिछड़ी जन–जाति से कहता है कि तुम अपने स्वरूप को पहचानते हुए प्रगति पथ पर आगे बढ़ों। उसकी भूमि में सैकड़ों खानें दबी पड़ी है। इस प्रकार विन्ध्य–वासियों के प्रति, वहाँ की उपेक्षित निम्न जातियों के प्रति जागरण का सामाजिक संदेश मुखर किया गया है। कवि वहाँ की पिछड़ी जन–जाति से कहता है कि तुम अपने स्वरूप को पहचानते हुए प्रगति पथ पर आगे बढ़ो–

"मत झुकना, मत बिछ जाना फिर बंधु।
नाहक कष्ट सहा है तुमने तात
कोल, गौंड हों मुंडा वो संभाल
आज भी तो विकसित हो तेरे बाल
देखो तुमसे माँग रहे ध्युतिदान
निर्विकल्प निश्चल सौ–सौ छिनमान।
उठो–उठो उठ जाओ विन्ध्य महान।
– उद्बोधन (कविता)

पुरानी रूढ़ियों और मान्यताओं के खंड़न का संदर्भ – नागार्जुन सदैव से ही पुरानी रूढ़ियों को तोड़ने के बड़े पक्षधर रहे हैं वे मानते हैं कि जितना हो सके उतना अपने विचारों को सबके सामने रखना चाहिए और किसी भी दूसरे की बातों या विचारों को अपनी सुविधाओं के अनुसार ही स्वीकार करना चाहिए न कि बंद आँखों से। उन्होंने स्वयं स्वीकार किया है कि पुरानी पीढ़ी व नई पीढ़ी के विचारों और आचारों में अंतर हो सकता है जिसे दोनों को ही स्वीकार करना चाहिए। 'पीपल के पीले पत्ते' में विशेष सांदर्भिक स्थिति पुराने पत्रों को सीधे टेरकर कहने और आगाह करने में है। कवि ने स्पष्ट शब्दों में कहा है कि–

"राह रोक कर खड़े न होना
झूठ–मूठ में बड़े न होना।"

इससे प्रतीत होता है कि नागार्जुन अपने उद्गार से लोगों को प्रभावित किये बिना नहीं रहते।

सामाजिक संदर्भ – समाज दो खाई में बँटा हुआ है एक अमीर तो दूसरा गरीब और सामाजिक संदर्भों को रूप देने वाले कवि सबसे उपेक्षित पशु है और उसकी स्थिति परभृत पिकशावक' की तरह है, कौवे के घोंसले में पलने वाले पिक–शिशु की तरह है। उसने अपनी स्थिति को इन शब्दों में प्रस्तुत किया है–

"तृषित क्षुधित हो, रुदित क्षुधित हो
इधर–उधर वह आये जाये
तुम्हीं ने उसको अपना पाये।"
– विवशता' (कविता)

माँजो और माँजो' कविता इस संदर्भ को प्रगट करने वाली श्रेष्ठ कविता है। कवि का मानना है कि शब्दों को अलंकृत

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-13, No.-I, Issues-16 YEAR- June. -2020

करने से वह ऊँचा नहीं बनता बल्कि सामाजिक संदर्भों को बतौर उपस्थित कथ्य की सही तलाश से ऊँचा उठता है–

"मांजो और मांजो, मांजते जाओ
लय करो ठीक, फिर–फिर गुनगुनाओ
मत करो पर्वाह, क्या है कहना
कैसे कहोगे इसी पर ध्यान रहे
चुस्त हो सेन्टेन्स, दुरुस्त को कड़ियाँ
पके इत्मीनान से गीत की बेड़ियाँ।"

आगे ध्वनि व व्यंग्य पर कटाक्ष करते हुए लिखते हैं कि–

"वस्तु है मूसो, रूप है चमत्कार
ध्वनि और व्यंग्य पर मरता है संसार
वाच्य या आशय पर कौन देता ध्यान।"

इस प्रकार कवि ने कविता को माँजने और निखारने पर व्यंग्य रूप में आक्रोश प्रस्तुत किया है जिससे स्पष्ट होता है कि कवि ने कथ्य और वस्तु के सामाजिक संदर्भ को ही साहित्य में महत्व दिया है।

राजनीतिक संदर्भ– उनके काव्य में राजनीतिक संदर्भ अनेक रूपों में प्रस्तुत हुआ है। गाँधी' नामक कविता में हम राजनीतिक लोकनायकत्व के संदर्भ को भी देख सकते हैं–

"कल मुझे लगा ऐसा कि, नहीं–
उस परमपिता परमेश्वर की प्रार्थना हेतु,
पर, दरस तुम्हारा पाने कोध्एकत्रित होती है जनता
उद्वेलित सागर–सी अधीरध्हे सर्वकाय, हे कृश शरीर।
– गाँधी (कविता)

कवि यह स्वीकार करता है कि वह जिस सागर की एक बूँद है, गाँधी उसी की तुंग तरंगों को प्रतिनिधित्व देने आये हैं। इस प्रकार कविता में व्यक्तित्व–निरूपण के साथ–साथ कवि ने गाँधी के राजनीतिक जननायकत्व के संदर्भ को अच्छी तरह उजागर किया है।

निष्कर्ष रूप में हम कह सकते हैं कि कवि नागार्जुन ने अपनी कविताओं में जहाँ एक आक्रोश द्वारा समसामयिक संदर्भों के सभी पक्षों को अछूता नहीं रखा है वही दूसरी ओर मानवीय सहानुभूति को भी अपनी लेखनी का विषय बनाया है।

*****